अज्ञेय

अलाव

माघ : कोहरे में अंगार की सुलगन ।
अलाव के ताव के घेरे के पार
सियार की आंखों की जलन

सन्नाटे में जब-तब चिनगी की चटकन
सब मुझे याद है : मैं थकता हूँ
पर चुकती नहीं मेरे भीतर की भटकन !

सदानीरा २
Delhi, National Publishing House 1986:386